शोध मंथन, 2017 ISSN: (P): 0976-5255, (e) : 2454-339X, Impact Factor 3.8942 (ICRJIFR)
UGC Aproved Journal No. 40908

औपनिवेशिक काल मे भारत में आधुनिक उद्योगो का विकास

डॉ0 बलकार सिंह

असि0 प्रोफे0, इतिहास विभाग, इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय, मीरापुर, रेवाड़ी, हरियाणा

सारांश

भारत मे आधुनिक उद्योगो का विकास 19 वी सदी के उत्तरार्ध मे हुआ। जब भारत मे कुटीर उद्योगो के स्थान पर मशीनी उद्योगो की स्थापना की जाने लगी। इससे पहले भारत मे हस्तशिल्प उद्योग बड़ी संख्या मे स्थापित थे और बड़ी मात्रा मे भारतीय वस्तुओ का निर्यात विदेशो मे किया जाता था परन्तु 18 वी सदी के अन्त मे हुई इंग्लैंड की औद्योगिक क्रांति का भारतीय हस्तशिल्प उद्योगो पर विपरित प्रभाव पडा और भारतीय कुटीर उद्योगो का पतन आरम्भ हो गया। भारत मे आधुनिक उद्योगो का विकास 19 वी सदी के मध्य मे रेलवे के विस्तार के साथ हुआ रेलवे के विस्तार ने देशी तथा विदेशी पूंजीपतीयो को भारत मे धन लगाने के लिये प्रेरित किया तथा भारत मे 1850 मे पहली सफल सूति कपड़ा मिल की स्थापना की गई। इस काल मे जूट, कोयला, लोहा तथा अन्य आधुनिक उद्योगो की भी स्थापना की गई। भारत मे आधुनिक उद्योगो का जिस रफ्तार से विकास होना चहाये था वह अंग्रेजो की स्वार्थपूर्ण नितीयो के कारण नही हो सका।

महत्वपूर्ण शब्दः *कुटीर–छोटे प्रकार के उद्योग, हस्तशिल्प–हाथ द्वारा निर्मित, उन्मूख–अग्रसर, दक्ष–कुशल, उद्यमी–उद्योगपति।*

Reference to this paper should be made as follows:

डॉ0 बलकार सिंह, ''औपनिवेशिक काल मे भारत मे आधुनिक उद्योगो का विकास'', शोध मंथन, जून 2017, पेज सं0 15–20

http://anubooks.com/?page_id=2030

Artcile No.3(SM410)

प्रस्तावना

भारत मे आधुनिक उद्योगो के विकास का आरम्भ उन परिस्थितियो मे हुआ जब ब्रिटेन के पूंजीपतीयो ने यहा से खूब धन कमाया तथा जब उनके पास अतिरिक्त धन बचने लगा तो उन्होने भारत मे पूंजी लगाने की सोची क्योकि इन पूंजीपतीयो को अपने देश मे पूंजी लगाने के लाभप्रद अवसर बहुत कम मिल रहे थे वही भारत मे उन्हे परिस्थितियां अपने अनुकूल दिखाई दे रही थी। भारत मे मजदूरी सस्ती थी और यहा पर कच्चा माल भी आसानी से प्राप्त हो सकता था तथा भारत मे बहुत बड़ा बाजार स्थापित था ये परिस्थितियां ब्रिटेन के पूंजीपतीयो को भारत मे पूंजी लगाने के लिये प्रेरित कर रही थी।1

भारत मे सर्वप्रथम आधुनिक उद्योगो की नीवं 1817 मे पड़ी जब एक अंग्रेजी व्यापारिक फर्म, मर्सस फर्ग्युस्सन एंड कम्पनी ने कलकत्ता मे सूति कपड़ा मिल की स्थापना का पहला प्रयास किया। परंतु यह प्रयोग असफल रहा आधुनिक उद्योगो की स्थापना का दूसरा प्रयास 1829 मे पाण्ड़िचेरी मे सूति कपड़ा मिल की स्थापना कर किया तथा तीसरा प्रयास 1830 मे पैट्रिक नामक एक व्यक्ति ने कलकत्ता के निकट मिल स्थापित कर किया। ये सभी प्रयास यूरोपियनो द्वारा किये गये तथा ये तीनो प्रयास विफल रहे। अब हमारे दिमाग मे यह सवाल उठता है कि ये तीनो प्रयास विफल क्यो रहे इसके कई कारण थे उस समय उद्योगो की सफलता के लिये भारत मे अनुकूल परिस्थितियां विद्यमान नही थी भारत मे उस समय पूर्ण रुप से कानून का राज स्थापित नही हो पाया था परिवहन और संचार के साधनो का विकाश भी प्रयाप्त रूप मे नही हो पाया था इसके कारण भारत के बाजारो से कच्चा माल खरीदना आसान नही था तथा तैयार माल को भारतीय बाजारो के छोटे–2 हिस्सो तक पहुचाना बड़ा मुश्किल था सरकार भी इन उद्योगो को प्रोत्साहन नही देती थी जिस कारण ये तीनो प्रयास विफल रहे।2

भारत मे 1853 मे रेलवे की स्थापना के साथ आधुनिक उद्योगो मे भी विकास का आरम्भ हुआ क्योकि संचार एवं परिवहन के साधन किसी भी देश के विकाश मे अपना महत्वपूर्ण स्थान रखते है। वैसे तो रेलवे की स्थापना का उद्देश्य साम्राज्यवादी था। अंग्रेज रेलवे के माध्यम से भारत का कच्चा माल उठा कर बंदरगाहो तक आसानी से पहुचाना चाहते थे तथा सेना को एक स्थान से दूसरे स्थान पर आसानी से भेजने के लिये। इन सब उद्देश्यो के अलावा रेलवे ने भारत को न केवल एक राष्ट्र के रुप मे जोड़ा बल्कि आधुनिक उद्योगो के विकास मे भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।3 रेलवे को चलाने के लिये कोयला अति आवश्यक था इसलिये रेलवे के साथ–2 कोयला खान उद्योगो का भी तेजी से विकास हुआ। ये उद्योग आपस मे एक दूसरे से जुड़े हुये थे। क्योकि इन्ही के आधार पर ही रेलो का विकास सम्भव था रेलवे की स्थापना के साथ भारत मे कपड़ा मिलो तथा जूट मिलो की शरूआत हुई। भारत मे इससे पहले नील, चाय, कॉफी आधुनिक उद्योग थे। अब ये उद्योग भी धीरे–2 और विकास करने लगे परंतु अब इनका स्थान अन्य आधुनिक उद्योगो ने ले लिया था। इन उद्योगो मे भारत मे नव औद्योगिक मजदूर वर्ग का उद्भव हुआ और भारत मे धीरे–2 आधुनिक उद्योगो ने विकास की गति पकड़ी। इन उद्योगो मे प्रमूख उद्योग इस प्रकार है।4

सूति वस्त्र उद्योगः–

भारत मे आधुनिक उद्योगो मे सबसे पहला नाम सूती वस्त्र उद्योग का आता है। भारतीय पूंजीपतीयो ने 1850 मे सूति कपड़ा उद्योग की शरूआत बम्बई मे की यह उद्योग पूर्णतया भारतीय था क्योकि इस उद्योग मे पूंजी, तकनीकी जानकार और प्रबंधक सभी भारतीय थे। इस उद्योग का पहला सफल प्रयास कवास जी नाना भाई ने किया उन्होने बम्बई स्पिनिगं एण्ड विविगं कम्पनी कि स्थापना की। इस उद्योग की प्रतिद्वंदता ब्रिटेन के शक्तिशाली उद्योगो से थी यह उद्योग घरेलू बाजार की और उन्मूख था तथा इसे भारतीय कपास का इस्तमाल करना था 1870 के बाद इस उद्योग का तेजी के साथ विस्तार हुआ।5 1875 मे भारत मे 48 सूति कपड़ा मिले थी और यह उद्योग अब अपनी विकाश की रफ्तार पकड़ने लगा और 1880 के समय तक भारत मे मिलो की संख्या 56 हो गई इस बढ़ती रफ्तार को देखकर ब्रिटेन के कपड़ा उद्योग के पूंजीपतीयो को चिंता होने लगी अब वे कपड़े और धागे के आयात कर को समाप्त करने की मांग भारतीय सरकार से करने लगे। ब्रिटेन के हितो को देखते हुये भारतीय सरकार ने उनकी इस मांग को 1879 मे स्वीकार कर लिया जिस कारण भारतीय कपड़ा उद्योग को काफी नुकसान पहुचा।6

भारत सरकार ने आयात कर को 1896 ई. मे फिर से लगा दिया क्योकि भारत मे अब जापान से कपड़ा निर्यात किया जाने लगा था। धन की आवश्यकता पूरी करने के लिये भारतीय सरकार ने भारतीय मिलो द्वारा उत्पादित कपड़े पर 5 प्रतिशत कर लगाया जो भारतीय कपड़ा मिलो के हितो के विरूद्ध था परन्तु बाद मे भारतीय सरकार ने इसे घटाकर 3.5 प्रतिशत कर दिया। भारत मे इस उद्योग के विकास मे अंग्रेजो ने शरूआत से ही बाधा डाली। प्रथम विश्व युद्ध तक इस उद्योग मे काफी बाधाये आई परंतु इसके के बाद सूति वस्त्र उद्योग मे काफी उन्नति देखने को मिली और यह उद्योग भारत मे धीरे–2 निरन्तर विकास करता रहा।7

जूट उद्योगः–

जूट उद्योग भारत का प्रमुखतम् उद्योग रहा है। भारत मे जूट को सोने के रेसे के नाम से भी जाना जाता है। जूट उद्योग को सूति वस्त्र उद्योग के बाद भारत मे दूसरा स्थान प्राप्त है। विश्व की उत्पादन क्षमता का 50 प्रतिशत जूट भारत मे होता है। सर्वप्रथम जूट उद्योग बंगाल मे कुटीर उद्योग के रूप मे स्थापित हुआ इस उद्योग मे सर्वप्रथम डूण्डी फलैक्स स्पीनर्स ने रूची ली ओर 1822 मे बंगाल मे जूट उद्योग स्थापित किया परंतु यह सफल नही हुआ और बाद मे डूण्डी फैक्ट्रीयो मे तकनीकी सुधार किये गये तथा अब सन के स्थान पर जूट का प्रयोग होने लगा।8 जार्ज आकलैंड नामक उद्यमी ने भारत मे जूट उद्योग की लाभप्रद विकास की सम्भावनाओ को देखते हुये 1855 मे हुगली नदी के तट पर रिसड़ा नामक स्थान पर पहली जूट मिल कि स्थापना की। कुछ समय बाद इस उद्योग से काफी लाभ होने की आशा दिखी और इनकी समर्द्धि के कारण बंगाल मे कई स्थानो पर ब्रिटिश उद्योगपतीयो ने जूट मिलो की स्थापना की। यह उद्योग यूरोपियन द्वारा स्थापित किया गया था तथा इस पर इंग्लैंड के पूंजीपतीयो का स्वामित्व सथापित था।9 इस उद्योग की सफलता से भारत मे जूट उद्योग का काफी विकास हुआ। जूट का प्रयोग वस्तुओ को बांधने के लिये किया जाता था तथा जूट से बोरियॅा भी बनाई जाती थी। 1880 के

बाद भारत की आटे और नमक की बोरियो का निर्यात विदेशो मे किया जाने लगा और यह उद्योग निरंतर विकास करता रहा। पहले विश्व युद्ध के दौरान जूट उद्योग मे बहुत समर्षद्धि हुई। रूस से सन का आयात बंद होने से ब्रिटेन मे कच्चे जूट की मांग बढ़ गई। तथा दूसरे विश्व युद्ध के दौरान जूट उद्योगो मे काफी प्रगति हुई इस समय विदेशो मे जूट के माल की मांग बहुत ज्यादा बढ़ गई थी इस उद्योग मे न कभी गिरावट आई और न कभी इसे विदेशी प्रतिद्वदंता का सामना करना पड़ा।10

कोयला उद्योगः–

कोयला भारत का एक प्राचीन उद्योग रहा है। भारत मे रेलो के विकास ने कोयला उद्योग को महत्वपूर्ण उद्योग बना दिया क्योकि रेलो का विकास इसी पर निर्भर करता था। अंग्रेजी काल मे इसका विकाश कई यूरोपियन कम्पनीयो द्वारा किया गया 1850 के बाद इस उद्योग ने विकास की गति पकड़ ली। 1875 मे कायेला खानो की संख्या 56 हो गई थी। कोयला का ज्यादातर उपयोग भारतीय उद्योगो मे ही होता था बहुत कम मात्रा मे यह निर्यात किया जाता था। कोयले से बिजली का भी उत्पादन किया जाने लगा था।11 अधिकांश अच्छी कोयले की खानो पर यूरोपियो का ही अधिकार स्थापित था भारतीय पूंजीपतीयो का जिन कोयले की खानो पर अधि ाकार स्थापित था वे निम्न दर्जे की खाने थी। भारत मे आधुनिक उद्योगो का विकास कोयले की खानो पर निर्भर करता था क्योकी औद्योगिक बिजली का प्रमुख साधन कोयला ही था कोयला की खाने बिहार उडीसा और बंगाल मे स्थापित थी विश्व युद्धो के दौरान कोयला उद्योगो मे बहुत समृद्धि हुई। 1937 तक भारत मे 2 करोड़ 50 लाख टन कोयले का उत्पादन होता था। कोयला खान उद्योगो मे मजदूरो की दशा बहुत खराब थी इनके मालिको को सिर्फ अपने मुनाफे की चिंता थी जिस कारण सरकार ने 1944 मे कोयला खान नियंत्रण आदेश पास किया। स्वतंत्रता प्राप्त करने से पहले इस उद्योग की राष्ट्रीयकरण की मांग उठाई गई थी।12

लोहा और इस्पात उद्योगः–

लोह अयस्क भंड़ार भारत मे सैकड़ो वर्षो से स्थापित है। आधुनिक काल मे लोहा और इस्पात उद्योग देश का मुख्य उद्योग बन गया है। लोहा और इस्पात उद्योग पर अन्य उद्योग भी निर्भर करते है। इस उद्योग को अर्थतन्त्र कि रीढ़ भी माना जाने लगा है। नोल्स ने औद्योगिक क्रांति का मुख्य आधार लोह और इस्पात उद्योग को माना है। ब्रिटेन मे लोहे और इस्पात उद्योग का औद्योगिकरण मे विशेष योगदान रहा है।13 भारत मे 19 वी सदी के प्रारम्भ मे लोह और इस्पात उद्योग का प्रारम्भ हुआ 1875 से पहले भारत मे इस उद्योग के कई कारखाने स्थापित हुये परंतु इन कारखानो को किसी न किसी कारण से सफलता प्राप्त नही हुई। 1875 मे झरिया तथा रानीगंज मे कोयला के भण्ड़ार के निकट कुल्टी मे बाराकर फाडण्ड्री की स्थापना हुई इस कम्पनी ने कुछ वर्षो मे 50 हजार टन कच्चे लोहे की उत्पादन क्षमता प्राप्त कर ली। परंतु यह लोहा अच्छे किस्म का नही था 1910 मे इस कम्पनी ने मानभूमि और सिहं भूमि क्षेत्र से लोहा लेना शरू किया जिसे काफी सफलता प्राप्त हुई।14 लोहा इस्पात उद्योग मे क्रांतिकारी कदम 1907 मे जमशेद जी टाटा द्वारा उठाया गया। भारत सचिव जार्ज हेमिल्टन और वायसराय लार्ड कर्जन ने टाटा

को उद्योग लगाने के लिये काफी प्रोत्साहित किया 1908 मे इस कारखाने का निर्माण शरू हुआ। 1911 मे टाटा कम्पनी ने लोहा बनाना आरम्भ किया और 1912 मे पहली बार इस्पात बनाया गया इस कारखाने का पूर्ण विकास प्रथम महायुद्ध के बाद हुआ।15 प्रथम विश्व युद्ध शरू होने पर लोहे की मांग बढी और टाटा कम्पनी ने इस मांग को पूरा करने के लिये उत्पादन बढ़ा दिया। परन्तु विश्व युद्ध की समाप्ती पर इस उद्योग को भी विदेशी प्रतिद्वंदता का सामना करना पड़ा जिसके कारण भारत सरकार ने विदेशो से आयात किये जाने वाले लोहे और इस्पात पर कर लगा दिये इसी सरकारी संरक्षण के कारण यह उद्योग प्रथम महायुद्ध के बाद उत्पन्न हुये संकट से बच गया तथा बाद मे इस उद्योग का निरंतर विकास होता रहा।16

अन्य उद्योगः–

भारत मे इसके अलावा 1890 और 1914 के मध्य अन्य उद्योगो का विकास हुआ इनमे मुख्य रूप से पट्रोलियम, अभ्रक, मैगनीज, सीमेंट, एल्यूमीनियम, चमड़ा, तेल ,चीनी, शीशा आदि नए उद्योग स्थापित किये गये। इसके अलावा 'अभियंत्रण और रेलवे के कारखाने तथा लोहे एवं पीतल के ढलाईघर भी खुले'। इनमे से कुछ को विदेशो मे बाजार प्राप्त हुआ परंतु इनकी प्रगति धीमी और कठीन रही। परन्तु तब भी इन उद्योगो ने धीरे–2 बाजार मे अपना स्थान बना लिया और ये उद्योग धीरे–2 विकास करते रहे।17

आजादी प्राप्त करने तक भारत मे ऐसे ही उद्योगो का विकास होता रहा परंतु इनका विकास इस स्तर पर नही हुआ कि भारत एक औद्योगिक देश बन पाता स्वतंत्रता के समय भारत विश्व के निर्धनतम देशो मे से एक था। भारत मे औद्योगिक पिछड़ेपन के कई कारण थे भारत मे मशीनी औजार तैयार करने के कोई उद्योग स्थापित नही थे क्योकि मशीनी औजार किसी भी देश की औद्योगिक प्रगति के लिये बडे आवश्यक होते थे भारत मे इंजिनियरिग संस्थान बहुत कम थे जो संस्थान थे वे अंग्रेजो कि सैनिक आवश्यकताओ और लोक निर्माण के कार्यो को पूरा करते थे भारत मे श्रम बहुत मात्रा मे उपलब्ध था और सस्ता भी था परंतु तकनीकी कर्मीयो और दक्ष श्रम की बहुत कमी थी अंग्रेज भारत मे सिर्फ अपनी आवश्यकताओ को पूरा करना चाहते थे वे नही चाहते थे कि भारत का औद्योगिक विकास हो। भारत अंग्रेजो की इन्ही स्वार्थपूर्ण नीतियो के कारण औद्योगिक विकशीत देश नही बन पाया।18

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. प्रसाद एल. 2008, ''आधुनिक भारत'' अर्चना पब्लिसन प्रा. लि. नई दिल्ली–110028, पृ.124.

2. मिश्र ग्रीस, 2012, ''आधुनिक भारत का आर्थिक इतिहास'' ग्रंथ शिल्पी प्रा. लि. नई दिल्ली–110002, पृ. 211.

3. सिंह जसवाल अवतार, 201ष्ट, ''आजादी की लड़ाई गांधी और भगतसिंह'', अनामिका प. एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रा. लि. नई दिल्ली–110092. पृ. 33.

4. सेन सुकोमल 2012, ''भारत का मजदूर वर्ग'' नई दिल्ली, पृ.35.

5. मिश्र ग्रीस, 2012, ''आधुनिक भारत का आर्थिक इतिहास'' ग्रंथ शिल्पी प्रा. लि. नई दिल्ली–110002, पृ.212.

6. प्रसाद एल. 2008, ''आधुनिक भारत'' अर्चना पब्लिेसन प्रा. लि. नई दिल्ली–110028, पृ.125.
7. चंद्र मित्तल सतीस, 2012, ''भारत का सामाजिक–आर्थिक इतिहास 1758–1947'', हरियाणा ग्रंथ अकादमी पंचकूला, पृ.274.
8. वही पृ.277.
9. मिश्र ग्रीस, 2012, ''आधुनिक भारत का आर्थिक इतिहास'' ग्रंथ शिल्पी प्रा. लि. नई दिल्ली–110002, पृ.203.
10. वही पृ.210.
11. प्रसाद एल. 2008, ''आधुनिक भारत'' अर्चना पब्लिेसन प्रा. लि. नई दिल्ली–110028, पृ.126.
12. शर्मा प्रणव, 2013, ''भारत का आधुनिक इतिहास'' निर्मल पब्लिकेशंस् दिल्ली–110094, पृ.288.
13. चंद्र मित्तल सतीस, 2012, ''भारत का सामाजिक–आर्थिक इतिहास 1758–1947'', हरियाणा ग्रंथ अकादमी पंचकूला, पृ.280.
14 वही पृ.281.
15. ताराचंद, 1969, ''भारतीय स्वतन्त्रा आन्दोलन का इतिहास'', सूचना और प्रसारण मंत्रालय नई दिल्ली, पृ.294.
16. चंद्र मित्तल सतीस, 2012, ''भारत का सामाजिक–आर्थिक इतिहास 1758–1947'', हरियाणा ग्रंथ अकादमी पंचकूला, पृ.283.
17. देशाई ए. आर. 2012, ''भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पष्ष्टभूमि'' मैकमिलन इंडिया लि. मद्रास–600041, पृ.84.
18. मिश्र ग्रीस, 2012, ''आधुनिक भारत का आर्थिक इतिहास'' ग्रंथ शिल्पी प्रा. लि. नई दिल्ली–110002, पृ.234–236.